International Journal of Multidisciplinary Horizon

ISSN:3049-2017
IJMH 2024; 1(1): 44-47
© 2024 IJMH
www.themultijournal.com

Received: 12-04-2024
Accepted: 18-04-2024
Publish : 20-04-2024

प्रो. नीता माथुर
प्रोफेसर, विवेकानंद महाविद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

Correspondence:
प्रो. नीता माथुर
प्रोफेसर, विवेकानंद महाविद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

वल्लभ संप्रदाय (पुष्टि मार्ग) में सोम यज्ञ अनुष्ठान की परम्परा

प्रो. नीता माथुर

वेद भारतीय संस्कृति, सभ्यता एवं ज्ञान विज्ञान के स्रोत हैं। वेद चतुष्ट्य, (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद) उपनिषदों तथा पुराणों में यज्ञों की अपार महिमा का निरुपण हुआ है। वेद एवं उपनिषद ब्रह्म ज्ञान और आत्म चेतना के वे शाश्वत आधार स्तंभ हैं, आत्मानुभूति की ऐसी आधार शिला हैं, जहां वैदिक ऋषियों ने आख्यानों, उपाख्यानो के माध्यम से आनन्दकन्द स्वरूप, रसानन्द 'रसो वै सः'[1] ब्रह्मानन्द का रसपान कराया है। उपनिषदों का उद्देश्य है - मानव को पुरुषार्थ चतुष्ट्य (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) की सिद्धि करते हुए जीवन लक्ष्य तक पहुंचाना तथा परम तत्व की अनुभूति कराना।

वैदिक विचारधारा के अनुसार पंच महायज्ञो (भूत यज्ञ, पितृयज्ञ, अतिथि यज्ञ, देव यज्ञ और ब्रह्म यज्ञ) का संपादन प्रत्येक व्यक्ति की जीवन पद्धति का अनिवार्य अंग था अतः वैदिक संस्कृति में यज्ञ को श्रेष्ठतम कर्म माना गया है :-

"यज्ञो वै श्रेष्ठतम कर्म"। अतः द्रव्य यज्ञास्तपो यज्ञा योग यज्ञास्तथापरे।
स्वाध्याय ज्ञान यज्ञाश्च यतयः संशितव्रताः ॥ (गीता, अध्याय – 4)[2]

के अनुसार जीवन को यज्ञ की समर्पण किया से जोड़ देने पर जीवन दिव्य, धन्य और सार्थक बन जाता है। इसलिए श्रीकृष्ण कहते हैं, मत्कर्म परमो भव, मेरे लिए कर्म करो 'कर्म ब्रह्मोद्भव विद्धि"[3] कर्म ब्रह्म स्वरूप है। इन सभी प्रमाण वाक्यों से सिद्ध होता है कि यज्ञ रूप कर्म निष्काम भाव से परमेश्वर की आज्ञानुसार किया जाना चाहिए।

वैदिक संस्कृति में यज्ञ के विशिष्ट महत्व का प्रतिपादन हुआ है। भारतीय मनीषियों ने वेद वर्णित ऋचाओं का प्रत्यक्ष कर्माभ्यास कर यज्ञ विज्ञान का आविष्कार किया है। यज्ञ हमारे समग्र सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का केन्द्र बिन्दु रहे हैं। मानव का और यज्ञ का पारस्परिक सम्बंध सृष्टि के आदि काल से चला आ रहा है। यूं तो समग्र सृष्टि ही यज्ञमय है। "यज्ञो वै विष्णुः" के अनुसार यज्ञ स्वयं भगवान का प्रतिरूप है। यज्ञ के द्वारा धर्म, देश, जाति, मर्यादा की रक्षा हेतु महापुरुषो की सत्संगति का लाभ लिया जाता है। भारतीय संस्कृति में विश्व कल्याण की भावना से प्रेरित तथा आत्मीयता के विकास के लिए यज्ञ का निर्धारण किया गया है। यथा शक्ति देश, काल, पात्र आदि का विचारपूर्वक द्रव्य त्याग की धारणा को समुचित रूप से सम्पन्न करने का नाम यज्ञ है। इसी यज्ञीय संस्कृति के पोषक अखंड भूमण्डलाचार्यवर्य जगद्गुरू श्रीमद्वल्लभाचार्यचरण कुल भूषण रहे हैं जिनका प्राकट्य एक सौ सोमयज्ञों की पूर्णाहुति के फलस्वरूप हुआ।

पुष्टि मार्गीय परम्परा मे सोम यज्ञ की अत्यधिक महत्ता है। महाप्रभु वल्लभाचार्य जी के पूर्वजों में श्री यज्ञनारायण जी को मूल पुरुष माना गया है जिन्होंने क्रमशः 32 सोमयज्ञ संपादित किए। मान्यता है कि इन्ही यज्ञों से सप्तम्पीठ निधि स्वरूप श्री मदनमोहन जी का प्राकट्य हुआ। इसी परम्परा में श्री गंगाधर जी और श्री गणपति भट्ट ने क्रमशः 28 और 30 सोमयज्ञ सम्पन्न कराकर यज्ञीय परम्परा को गौरवान्वित किया। तत्पश्चात वल्लभ भट्ट ने 5 सोमयज्ञ पूर्ण कर यज्ञ संस्कृति को धन्य करने का श्रेय

प्राप्त किया। सोमयज्ञ की पुनीत परम्परा मे पितृचरण श्री लक्ष्मण भट्ट ने अंतिम 5 सोमयज्ञ पूर्ण किए। इन्ही सोम यज्ञों के फलस्वरूप अग्निकण्ड से वैशाख कृष्ण एकादशी, (विक्रमी संवत् 1535) की पावन बेला में महाप्रभु वल्लभाचार्यजी का प्राकट्य हुआ। वल्लभाचार्य जी ने भी स्वयं अनेक सोमयज्ञ किए। इसके उपरान्त आपके ज्येष्ठ पुत्र श्री गोपी नाथ जी एवं द्वितीय पुत्र गुंसाई श्री विठ्ठलनाथ जी ने सोम यज्ञ (सोमयाग) की इस परम्परा को आगे बढ़ाया और उनके बाद भी वल्लभ कुल आचार्यों द्वारा सोमयज्ञ के अनुष्ठान की परम्परा का निर्वाह अद्यावधि पर्यन्त किया जा रहा है।

सोम यज्ञ की दीक्षा और उसके सम्पादन का स्वरूप वैदिक परम्परानुकूल रहा है। जो इसको विधि विधान पूर्वक संपादित करता है और नित्य प्रति अग्नि होम करता है, उसे ही सोमयाजी दीक्षित कहलाने का अधिकार प्राप्त होता है।

आचार्य वल्लभ ने जहां शुद्धाद्वैत सिद्धान्त परक पुष्टि मार्ग की स्थापना की, वहीं अपने पितृकुल से प्राप्त वैदिक यज्ञ विज्ञान की पूर्ति विश्वकल्याण और स्वात्मबोध हेतु पूर्ण की थी। परम वैदिक वंश परम्परा के आप अवतंश थे अतः यज्ञ विज्ञान और संस्कृति आपको अपने पूर्वाचार्यों से संस्काराचार के रूप में प्राप्त हुई थी।

श्री मद् वल्लभाचार्य जी आज्ञा करते हैं कि जैसे ध्यान, धारणा आदि से आनन्द रूप भगवान की अभिव्यक्ति होती है उसीप्रकार अग्न्याधान से लेकर सोमयाग (सोमयज्ञ) पर्यन्त की वेद प्रतिपादित ध्यानपूर्वक की गई क्रिया से भी यज्ञ स्वरूप भगवान की अभिव्यक्ति होती है। अग्नि की उपासना निराकार ब्रह्म की उपासना है। अग्निचयन निराकार में से साकार ब्रह्म की ओर वैदिक धर्म का प्रथम सोपान है। श्री मद् वल्लभाचार्य जी के साकार ब्रह्मवाद की स्वीकृति के कारण यह सगुण साकार ब्रह्म की ओर जाने का सोपान अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

महाप्रभु वल्लभाचार्य जी ने ज्ञान, कर्म और भक्ति मार्ग को जीवन के 'त्रिपथ' के रूप में मान्य किया था। इस दृष्टि से "सोमयज्ञ" ज्ञान एवं भक्ति का कर्ममार्गीय स्वरूप है। यह यज्ञ केवल लौकिक क्रिया ही नहीं, अपितु भगवदात्मक क्रिया रूप है।

वैदिक धर्म मे यज्ञ नारायण का आराधन तथा उसके द्वारा समस्त सृष्टि का पोषण संभव है। यज्ञ करना और कराना मानव जीवन के प्रमुख अंग रहे हैं। वैदिक संस्कृति मे यज्ञनारायण के विभिन्न प्रकार एवं स्वरूपों के दर्शन होते रहे हैं, जिनमें अश्वमेध, राजसूय, पुत्रेष्टि यज्ञ, सोमयज्ञ आदि प्रमुख रहे हैं। इन सभी में सोमयज्ञ का विशिष्ट स्थान है जो समूची मानव जाति की सुख समृद्धि एवं विश्व कल्याण के लिए समायोजित किए जाते रहे हैं।

सोम यज्ञ आर्यों का प्रसिद्ध याग रहा है। अग्नि में सोमलता के रस की आहुति देने के कारण यह सोमयाग कहलाता है। सोम यज्ञ के मुख्य सात प्रकारो मे अग्निष्टोम, अत्यग्निष्टोम, उक्थ्य, षोडशी, वाजपेय, अतिरात्र और आप्तोर्याम की गणना होती है।

श्रौत कर्म में सोम यज्ञ की सर्वोच्चता बताई गई है। सोम वल्ली के लिए भगवान श्रीकृष्ण भगवद्गीता मे स्वमुख से आज्ञा करते हैं "पुष्णामि औषधीः सर्वः" सोमो भूत्वा रसात्मकः (भगवत् गीता, 13/15) अर्थात समस्त औषधियों का पोषण कर्ता सोम मैं ही हूँ, अर्थात सोमवल्ली सोमरस भगवान श्रीकृष्ण का ही स्वरूप है। सोमयज्ञ भक्ति का कर्ममार्गीय स्वरूप है। सोमयज्ञ स्थल समग्र ब्रह्मांड के केन्द्र का स्वरूप धारण कर लेता है। सोमयज्ञ की परिक्रमा ब्रह्माण्ड की परिक्रमा का फल देती है, ऐसी वैदिक मान्यता है। यह यज्ञ केवल 'सोमयाजी दीक्षित' अर्थात् उन्ही ब्राह्मणों द्वारा किया जाना निर्धारित है जो सोमयज्ञ की विशिष्ट दीक्षा में दीक्षित हैं।

वर्तमान में सोमयज्ञ की पुनीत परम्परा का निर्वाह करते हुए श्री प्रथमेश जी से दीक्षित पूज्य जगद्गुरू आचार्य और वल्लभ कुल वंशज पद्मभूषण आचार्य (डॉ.) पं. गोकुलोत्सव जी महाराज इस यज्ञ को सम्पन्न कर रहे हैं। अनन्त श्री विभूषित महाराज श्री इन्दौर जगद्गुरू श्रीमद् वल्लभाचार्य सम्प्रदाय के पीठाधीश्वर हैं और वेद, वेदान्त, उपनिषद, सामगान, ध्रुपद, प्रबंध, हवेली संगीत, शुद्धाद्वैत साकार ब्रह्मवाद, वल्लभ वेदान्त तथा विभिन्न शास्त्रों के प्रकाण्ड विद्वान हैं। महाराज श्री ने वैदिक परम्परा का अनुशीलन करते हुए सोमयागों का न केवल भारत के विभिन्न नगरों, कस्बो एवं ग्रामो में अपितु विदेशों (लंदन, अमरीका, बहरीन आदि देशों में) मे भी सफलता पूर्वक अनुष्ठान किया है। आपके सुपुत्र एवं शिष्य 'सोमयज्ञ सम्राट' एवं सर्वाधिक सोमयाग संपादन में विश्व रिकॉर्ड बनाने हेतु सम्मानित आचार्य (डॉ.) व्रजोत्सव जी महाराज ने भी अनेको सोमयज्ञों का अनुष्ठान करके ख्याति अर्जित की है।

आचार्य गोकुलोत्सवजी महाराज श्री के शब्दों में[4], "सोमयज्ञ भारतीय संस्कृति की वैदिक विधि है। इसमें न तो भौतिक दृष्टिकोण है और न ही अर्थहीन प्रदर्शन, अपितु इसके द्वारा शुद्ध वैदिक विधान के द्वारा भारतीय दर्शन की दिव्य परम्परा का जागृत स्वरूप मुखरित होता है। यज्ञ से जनजीवन को सुरक्षित रखकर धर्म सुखी एवं समृद्ध बनता है। "यज्ञो वै महिमा" (यजुर्वेद 12/67) अतः यज्ञ की बड़ी महिमा है। श्रौत याग या यज्ञ को 'अध्वर' भी कहा जाता है। "अध्वरौ वै यज्ञः"। 'ध्वर' अर्थात हिंसा। जो यज्ञ हिंसा रहित हो, वह 'अध्वर' कहा जाता है। यज्ञ रूपो हरिः, यज्ञौ वै विष्णुः इस न्याय से यज्ञ साक्षात् विष्णु का प्रतिरूप है। 'ब्रह्मोद् भवं विद्धि' कर्म ब्रह्म स्वरूप है। इन सभी प्रमाण वाक्यों से सिद्ध होता है कि यज्ञ रूप कर्म निष्काम भाव से होना चाहिए। यज्ञ से विज्ञान, राष्ट्र एवं समाज की उन्नति अर्थात राष्ट्रोन्नति होती है। यज्ञ के पवित्र एवं अभिमन्त्रित आज्य के धूम से पर्यावरण पवित्र होता है। "यज्ञात् भवति पर्जन्यः" यज्ञ से वर्षा

होती है। यज्ञ से दीनता, समर्पण का भाव जागृत होता है। ऋग्वेद में कहा है "ऋतुमान राज इव अमेन विश्वा दुरिता घनिघ्न।" सोमदेव एक पराक्रमी सम्राट है जो दुष्ट वृत्तियों का नाश करता है। जीवन एक धर्मयज्ञ है। यज्ञ से जनजीवन को सुरक्षित रखकर धर्म सुखी एवं समृद्ध बनता है। यज्ञ मुख्यतः दो प्रकार के हैं:- हविर्याग और सोमयाग। हविर्यागों के अन्तर्गत 'इष्टि' और 'पशुबन्ध' आते हैं। सोमयज्ञ के मुख्यतः सात प्रकार हैं : - अग्निष्टोम, अत्यग्निष्टोम, उक्थ्य, षोडशी, वाजपेय, अतिरात्र, आप्तोर्याम। निर्धारित समय सीमा, कर्मकाण्ड, विधि, स्तोत्र एवं विशिष्ट ऋचा पाठों के आधार पर उक्त सोमयागों का संपादन होता है।" महाराज श्री ने कई बार अपने प्रवचनों, व्याख्यान मालाओं के माध्यम से इस विषय से जुड़े महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर प्रकाश डालते हुए
कहा है जिसका सारांश इस प्रकार है:-

सोम याग की विशेषता यह है कि इसमें यज्ञ में आहुति देते समय 'स्वाहा' का उच्चारण न करते हुए 'वषट' शब्द का उच्चारण करते हुए यज्ञ वेदिका में आहुति दी जाती है। जब सामगान होता है, स्तुति की जाती है, वीणा वादन होता है, तत्पश्चात जो ऋग्वेदी है, वो ऋग्वेदी 'होता' ऋचाओं का पाठ करता है और 'आग्निध्र' एक कृपाण और खड्ग लेकर के दक्षिण दिशा की ओर खड़ा होता है। क्योंकि दक्षिण दिशा असुरों की दिशा है। अत: असुर यज्ञ का फल हरण न कर लें, इसलिए कृपाण पर दर्भ (कुश या घास) बाँध देता है। कुश अग्निमय होता है अतः उसे लपेटकर आग्निध्र बोलता है दक्षिण दिशा की ओर मुख करके 'अस्तु श्रौषट्', कि हां, अब आहुति दो। असुर भाग चुके हैं। तब 'होता' 'वौषट' कहता है, प्रणाम करते हुए। तब तक हृदय पर हाथ रखता है क्योंकि हृदय में ही दश प्राण एकत्र होते हैं- प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान , नाग, कूर्म, कृकल, देव दत्त और धनंजय। ये दश प्राण जब आस्य में आते हैं तब साम का गान होता है। अब यजुर्वेदी आहुति प्रदान करता है। तो ये पूरा स्वर विज्ञान, स्वर संधान की पद्धति है। ये सब आहुति है। अहंकार की आहुति है कि **"अहम् माम् ब्रहमाग्नौ जुहोमि स्वाहा"** मैं ब्रह्माग्नि में, इस नाद ब्रह्म की अग्नि में अपना अहंकार विसर्जित कर देता हूँ। यह कितना बड़ा संस्कृति और स्वर का सृजन है।[5]

कालावधि के आधार पर सोम यज्ञों के तीन मुख्य प्रकार हैं:-
१.एकाह (जिसमे एक ही दिन में सोम यज्ञ का सम्प्रदान होता है)
२.अहीन- (इस श्रेणी में उन यज्ञों का समावेश है जिनमें एकाह के पश्चात बारह दिनों से पूर्व तक सोमरस से यज्ञ होता है। यह एक या उससे अधिक यजमानों द्वारा सम्पन्न होता है। अन्त में अतिरात्र का अनुष्ठान होता है।
३.सत्र - इस यज्ञ में तेरह या उससे अधिक दिनों तक प्रतिदिन सोमरस का समर्पण होता है। सत्रों के अवान्तर भेद हैं- रात्रि सत्र और अयन सत्र। 100 दिनो से कम समयावधि में सम्पन्न होने वाला 'सोमयाग' रात्रि सत्र तथा उसके बाद तक संपन्न होने वाला 'अयन सत्र' कहलाता है।

शास्त्रोक्त विधान के अनुसार 'सोमयज्ञ' का सम्पादन करने वाले उच्चकोटि के ब्राह्मण अथवा सम्राट पद योग्य क्षत्रिय माने जाते हैं। यज्ञकर्ता सोमयागी सर्वश्रेष्ठ तथा ज्येष्ठ होता है। उसके लिए अपने से बड़ों को भी उठकर आदर देना, नमस्कार करना अथवा एक आसन पर बैठना निषेध है। ऐसा शास्त्र वर्णित है। वह ही श्वेत छत्र लगा सकता है, अन्य को इसका अधिकार नहीं है। सोमयागी किसी के हाथ का बना अन्न नहीं खाए, केवल स्वयं अथवा पत्नी अथवा पत्नी के परिवार के हाथ से या पंचद्रविण ब्राह्मण के हाथ का ही अन्न ग्रहण कर सकता है,ऐसा शास्त्रीय विधान है।

यजुर्वेद के चौथे अध्याय से दसवे अध्याय पर्यन्त अध्यायों में सोमयाग के मन्त्रो का संग्रह है, यज्ञ के लिए अग्नि प्रकाशित करने हेतु कृत्रिम साधनों (माचिस, लाइटर इत्यादि से) का नहीं, अपितु घर्षण प्रक्रिया का प्रयोग किया जाता है जिसे 'अग्नि मंथन' या 'अरणि मंथन' कहा जाता है। अग्नि मंथन में वेद मन्त्रो के उच्चारण द्वारा अरणि मंथन से यज्ञाग्नि सोमयज्ञ स्वरूप में श्री महाप्रभु जी के वैश्वानर स्वरूप में प्रकट होती है। अग्नि में आहुति देते समय अन्य यज्ञो की भांति 'स्वाहा' का उच्चारण न करके 'वषट' शब्द का उच्चारण करते हुए यज्ञ वेदिका में आहुति दी जाती है।

'सोमयज्ञ सम्राट' एवं सर्वाधिक सोमयागों के अनुष्ठान मे (भारत एवं विभिन्न देशों में आयोजित) विश्व कीर्तिमान, रिकार्ड बनाने हेतु सम्मानित आचार्य गोस्वामी (डॉ) व्रजोत्सव जी महाराज (सोमयाजी दीक्षित पद्मभूषण आचार्य (डॉ.) गोकुलोत्सव जी महाराज श्री के सुपुत्र एवं शिष्य) के शब्दों में[6] :-

"प्रथम सोमयज्ञ संवत् 1567 में श्री महाप्रभु जी ने किया था किन्तु इसके पूर्व आप श्री 5 सोमयज्ञो का क्रमशः अनुष्ठान कर चुके थे, ऐसा सम्प्रदाय के ग्रंथों के आधार से इंगित होता है। आपके ज्येष्ठ पुत्र गोपीनाथ जी ने भी दो सोम यज्ञ किए। इन सभी सोमयज्ञो में श्री दामोदर हरसानी, कृष्ण भट्ट माधव भट्ट कश्मीरी, कृष्णदास मेघन, कृष्णदास अधिकारी, भगवान दास सांचारी, सेठ पुरुषोत्तम दास, गोपाल दास जी, वासुदेव छकडा, दिनकर सेठ, पद्मनाभदास, प्रभुदास जलोटा, विश्वम्भरदास नरहरि जोशी ने तथा अन्य अनेक वैष्णवों ने भावनापूर्वक सेवा समर्पित की।

सोम विष्णु है, सोम चन्द्रमा है ये अत्यन्त सात्विक स्वरूप को धारण किए हुए हैं जिससे सृष्टि तृप्त, सन्तुष्ट हो। "न ध्वरा विद्यते यस्मिन् स सध्वरः" अध्वर यज्ञ को कहते हैं जिसमे ध्वर अर्थात हिंसा न हो। वल्लम संप्रदाय पुष्टि भक्ति मार्ग मे सोमयज्ञ का सैद्धान्तिक रहस्य छिपा हुआ है। यह बड़े ही सौभाग्य की बात
है कि जहां जहां सोमयज्ञ हुए हैं वहां श्री वल्लभाचार्य जी महाप्रभु का वैश्वानर अग्नि स्वरूप से प्राकट्य होता है।

सोम यज्ञ की दीक्षा वैदिक परम्परानुसार होती आई है। जो इसका वैदिक विधि विधानानुसार अनुष्ठान करता है और नित्य प्रति अग्नि होम करता है, उसे ही दीक्षित कहलाने का अधिकार है। सोम यज्ञ वैदिक संस्कृति की सनातन परम्परा का प्राचीनतम यज्ञ है जिसमें सामवेद की ऋचाओं का गान तथा वीणा का वादन होता है। आचार्य (डॉ.) गोकुलोत्सव जी महाराज श्री ने अद्यतन 96 सोमयाग सम्पन्न किए है। इनमे से आपके सुपुत्र एवं शिष्य आचार्य डॉ. व्रजोत्सवजी महाराज ने भी 54 सोमयाग सम्पादित किए हैं।

आचार्य डॉ. गोकुलोत्सव जी द्वारा सन् 1996 में लंदन, सन् 2000 में न्यूयॉर्क (अमेरीका) तथा 2024 में बहरीन में सोमयाग का सफल अनुष्ठान किया गया। इसमें भाग लेने के लिए भारत, अरब, सिंगापुर, ऑस्ट्रेलिया, फ्रांस, मिडिल ईस्ट, इंग्लैण्ड तथा अमेरिका के अनेक श्रद्धालुओं ने अत्यंत श्रद्धा एवं उत्साह पूर्वक भाग लिया। न्यूयॉर्क में नौ दिनों तक चले इस यज्ञानुष्ठान में न केवल भारतीय अपितु अमेरिकी भक्तों ने भी 12-12 घंटे परिक्रमा लगाई। इस मध्य आपके प्रवचनों से प्रभावित होकर अनेक लोगों ने माँस-मंदिरा, धूम्रपान आदि अशुद्ध वस्तुओं का परित्याग कर शुद्ध सात्विक जीवन अंगीकार करने का संकल्प लिया।

अतः निष्कर्षीय रूप से कहा जा सकता है कि सोमयज्ञ विश्वकल्याण, पर्यावरण शुद्धि, सर्व एकता और वैदिक संस्कृति की रक्षा आदि लक्ष्यों की पूर्णता के लिए है। इसके संपादन में भक्तिगत स्वार्थ नहीं, बल्कि सभी जीव सुख, समृद्धि, शान्ति और स्वास्थ्य का आनन्द लें, ऐसी अवधारणा होती है। यज्ञानुष्ठान मे सभी समाज के लोग परिपाटी के अनुसार सेवा का लाभ प्राप्त करते हैं और अपना अमूल्य योगदान देकर स्नेह भाव और परस्पर सहयोग से कार्य करते हैं। इस प्रकार समाज, देश अर्थात सम्पूर्ण राष्ट्र की उन्नति होती है।

सन्दर्भ सूची

1.छान्दोग्योपनिषद् (3/14/2) गीता प्रेस, गोरखपुर, २०१७ विक्रमी

2.भगवद् गीता, अध्याय 4, श्लोक सं. 28, गीता प्रेस, गोरखपुर, 2020

3.वही, अध्याय 3, श्लोक सं. 15

4.'सोमयज्ञ', लेखक एवं प्रवक्ता आचार्य पं. गोकुलोत्सव जी महाराज श्री, विराट वाजपेय सोमयाग महोत्सव, स्मारिका, २०००, पृ. सं. 2-5

5.आचार्य पं. गोकुलोत्सव जी महाराज द्वारा इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, दिल्ली में आयोजित व्याख्यान से उद्धृत अंश (दिनाङ्क 11 अक्टूबर, 2003)

6."सोमयज्ञ का महत्व", लेखक श्री व्रजोत्सव जी महाराज, विराट वाजपेय सोमयाग स्मारिका, २०००, पृ. सं. 6-14.